बाल भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय।

दिनांक: 2 जून 2020

कक्षा: चतुर्थ

विषय :हिंदी

सरकस

मनुज सिंह की देख लड़ाई,

की मैंने इस भाँति बड़ाई।

कहीं साहसी जन डरता है,

नर नाहर को वश करता है।

मेरा एक मित्र तब बोला,

भाई, तू भी है बस भोला।

यह सिंही का जना हुआ है,

किंतु स्यार यह बना हुआ है।

यह पिंजड़े में बंद रहा है,

कभी नहीं स्वच्छंद रहा है ।

छोटे से यह पकड़ा आया,

मार-मारकर गया सिखाया।

अपने को भी भूल गया है,

आती इस पर मुझे दया है।

शब्दार्थ

कौतूहल - जिज्ञासा

भय-विस्मय - डर और आश्चर्य

मनुज - मनुष्य

नाहर- शेर

सिंही- शेरनी

स्वच्छंद-स्वतंत्र

गृहकार्य

उपरोक्त कविता और शब्दार्थ को पढ़े और याद करें।